2 चार मित्र

एक घने जंगल में एक झील थी। उसके किनारे चार मित्र रहते थे। छोटा-सा भूरा चूहा, काला-कलूटा कौवा, कछुआ और हिरण। चारों मित्र हिलमिल कर सुख से रहते थे।

एक शाम चूहा, कौवा और कछुआ झील के किनारे बैठे-बैठे चौथे मित्र हिरण का इंतज़ार कर रहे थे। घंटों बीत गए पर हिरण नहीं आया।

"लगता है, हमारा मित्र किसी मुसीबत में फँस गया है" चूहे ने चिंतित होकर कहा।

"हाँ," कौवे ने कहा, "हो सकता है उसे किसी शिकारी ने पकड़ लिया हो।" कछुए ने कौवे से कहा "तुम उड़कर चारों तरफ देखते हुए हिरण का पता लगा सकते हो।" मैं देखकर आता हूँ।

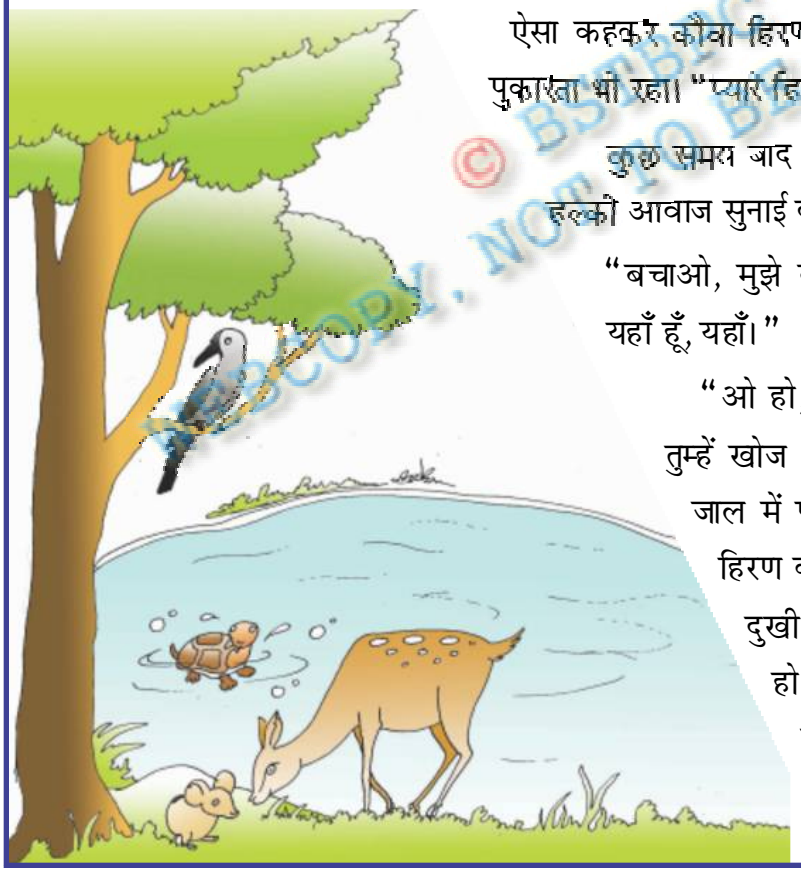

ऐसा कहकर कौवा हिरण की खोज में उड़ चला। हिरण को पुकारता भी रहा। "प्यारे हिरण तुम कहाँ हो? तुम कहाँ हो?"

कुछ समय बाद उसे अपनी पुकार के जवाब में एक हल्की आवाज सुनाई दी। वह हिरण की आवाज थी।

"बचाओ, मुझे बचाओ," हिरण कह रहा था, "मैं यहाँ हूँ, यहाँ।"

"ओ हो, तो तुम यहाँ हो? मैं न जाने कब से तुम्हें खोज रहा हूँ।" कौवे ने कहा। हिरण एक जाल में फँसा हुआ था। अपने दोस्त को देख हिरण की आँखों में आँसू भर आए। कौवे ने दुखी होकर कहा, "तुम तो जाल में फँसे हो। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्त चूहे के पास जाता हूँ और उसे लेकर वापस आता हूँ।"

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

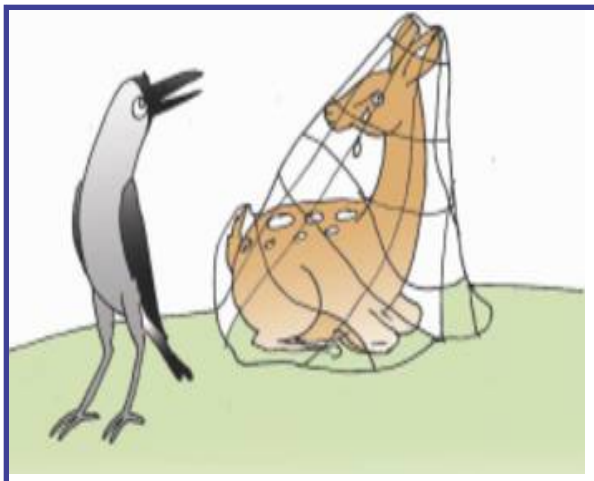

कौवा फुर्ती से उड़ता हुआ झील के पास लौट आया। कौवे ने हिरण को खोज निकालने और उसके जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों से कह सुनाई।

इस पर कछुए ने झटपट एक उपाय सोच निकाला। साथ ही उसने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं। चूहा जाल काटकर हिरण को आजाद करा सकता है। "हाँ, क्यों नहीं" चूहे ने कहा, "लेकिन मैं उसके पास जाऊँगा कैसे?"

"यह भी कोई बात है?" कौवे ने कहा, "मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलूँगा।"

"तो आओ चलें," चूहे ने कहा और उचककर कौवे की पीठ पर बैठ गया। चूहे को लेकर कौवा उड़ा और थोड़ी ही देर में हिरण के पास जा पहुँचा। चूहे ने जाल काटकर हिरण को आजाद कर दिया। इसी बीच कछुआ भी वहीं आ पहुँचा।

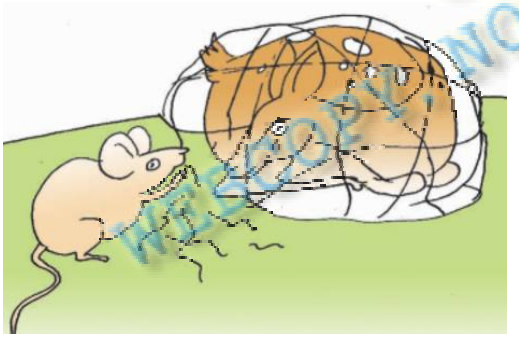

कछुए को देखकर चूहे ने कहा "तुम्हें यहाँ देखकर हमें अच्छा लगा किन्तु यह बात ठीक नहीं हुई। शिकारी के आने से हमलोग मुसीबत में पड़ सकते हैं।" अचानक किसी के आने की आहट सुनकर चारों चुप हो गए। उन्होंने देखा सामने से शिकारी चला आ रहा है।

शिकारी पर नज़र पड़ते ही कौवा उड़कर एक ऊँचे पेड़ की डाल पर जा बैठा। चूहा एक बिल में जा छिपा और हिरण चौकड़ी भरता हुआ पलभर में गायब हो गया। लेकिन कछुआ बेचारा क्या करता? वह जैसे-तैसे एक झाड़ी की ओर रेंगने लगा।

शिकारी जाल खाली देख भौंचक रह गया। वह चकित होकर इधर-उधर देखने लगा। अचानक

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED
WEBCOPY

उसकी निगाह झाड़ी की ओर रेंगते हुए कछुए पर पड़ी। उसने लपककर कछुए को पकड़ा और घास के फंदे में लपेट धनुष पर लटकाकर घर की ओर चल दिया। पेड़ पर बैठा हुआ कौवा सारी घटना को देख रहा था। उसने अपने दोस्तों को पुकारा और सारी बात बताई। अरे कौवे भाई, हिरण भाई अब क्या किया जाए? चूहे ने कहा, ''कछुए को आजाद कैसे कराया जाए?''

कौवे ने कहा, "हमें क्या करना है, यह मैं बताता हूँ। शिकारी के रास्ते में किसी तलैया के किनारे हिरण बेहोश होकर पड़ जाए। मैं उसके माथे पर बैठकर चोंच मारूँगा। इससे शिकारी हिरण को मरा हुआ समझेगा। फिर तो वह कछुए को छोड़ हिरण के लिए दौड़ेगा। उसी बीच चूहा घास का फंदा काट देगा और कछुआ आजाद हो जाएगा।'' "मान लें कहीं उसने हिरण को पकड़ लिया तो?" चूहे न पूछा। "अरे नहीं। तुम चिंता न करो। मैं इतना तेज दौड़ूँगा कि उसे नानी याद आ जाएगी।" हिरण ने कहा ।

हिरण शिकारी के रास्ते में जाकर आराम से पड़ गया।

"हिरण!" उसे देखते ही शिकारी खुश होते हुए सोचा, "कितना मोटा-ताजा हिरण।" उसने धनुष को जमीन पर रखा और हिरण की ओर दौड़ा। उसी समय चूहा फुर्ती से आया और घास के फंदे को काटकर कछुए को आजाद कर दिया। कछुआ पास की तलैया में घुस गया। उधर हिरण ऐसा दौड़ा कि शिकारी उसकी दुम भी न पकड़ सका।

वह खाली हाथ धनुष के पास लौट आया।

"यह क्या?" वह चीखा, "कछुआ नदारद!''

इतना सुस्त जानवर कैसे भागा होगा? आज तो दिन ही खराब है।" पछताता हुआ शिकारी घर की ओर चल पड़ा।

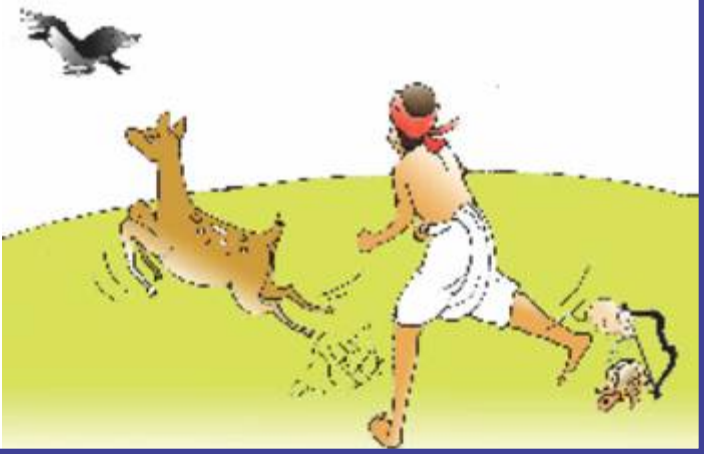

© BCIL BRC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

कौआ, हिरण, चूहा और कछुआ छिपे-छिपे शिकारी को देख रहे थे। जब वह चला गया तो वे सब ठाठ से बाहर निकल आए। फिर चारों मित्र चल दिए झील की ओर।

-**विष्णु शर्मा** (पंचतत्र)

(विष्णु प्रभाकर द्वारा संपादित एवं प्रकाशन विभाग भारत सरकार द्वारा प्रकाशित "सरल पंचतंत्र'' का संक्षिप्त रूप)

शब्दार्थ

शिकारी – शिकार करने वाला

चौकड़ी भरना – कूदते-फाँदते हुए दौड़ना

दुम – पूँछ

नदारद – गायब

भौंचक रहना – हैरान होना

अभ्यास

कहानी में से

1. बताइए, बाकी तीनों मित्रों में से किसने क्या किया जब –

   (क) शिकारी ने हिरण को पकड़ा

   (ख) शिकारी ने कछुए को पकड़ा

2. शिकारी क्या काम करता है?

3. अपने मित्र को देखकर जाल में फँसे हिरण की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

कैसा दिन ?

"आज तो दिन ही खराब है," शिकारी ने सोचा जब उसके हाथ कोई शिकार नहीं लगा।

आपके लिए स्कूल में अच्छा दिन कब होता है और कौन-सा दिन बुरा होता है?

क्या होता अगर

1. कौवे को हिरण दिखाई न देता ।
2. चूहे से घास का फंदा न कटता ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कौवे की बात

"कौवे ने हिरण को खोज निकालने और उसके जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों से कह सुनाई।" उसने क्या-क्या बताया होगा? लिखिए।

मित्रता

1. चारों मित्र मिलकर क्या करते होंगे? अपनी कल्पना से बताइए।
2. आपको अपने दोस्तों की जरूरत कब-कब पड़ती है?
3. ऐसे कौन-कौन से काम हैं जो आप अपने दोस्तों के साथ करना पसंद करते हैं?

आपकी कहानी

मान लीजिए शिकारी दूसरी बार भी हिरण को पकड़ लेता, फिर कहानी आगे कैसे बढ़ती? अपने मन से कहानी लिखिए।

कुछ मजे के लिए

यह कहानी पंचतंत्र नाम की किताब से ली गई है। इस किताब में और भी कई मजेदार कहानियाँ हैं। इस किताब में से और कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सबसे ज़्यादा

इस कहानी में कौन सबसे

- तेज़ ....
- बहादुर ....
- समझदार ....
- लालची ....
- मूर्ख ....
- मिलनसार ....